IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 21, Issue 2, Ver. I (Feb. 2016) PP 107-109
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

मीराबाई का काव्य के सौन्दर्य की विशेषताएं

डॉ. बीना शर्मा
व्याख्याता , हिंदी विभाग , विश्व भारती डिग्री कॉलेज , सीकर , राजस्थान

सारांशः *मीराबाई भक्तिकालीन सगुणोपासक कृष्ण भक्ति शाखा की एकमात्र कवयित्री है। मीरा ने मध्यकालीन नारी को भक्ति के माध्यम से प्रेम के प्रति अनन्य निष्ठा और अपने आराध्य के प्रति सर्वस्व समर्पण का संदेश दिया। मीरा के संपूर्ण जीवन और काव्य में एक उदात्तर दृढव्रतर आत्मचेता व्यक्तित्व की ऊर्ध्वगामी भक्ति साधना का प्रतिबिंब दिखाई देता है। आत्मोद्धार के लिए उसमें संसार और सांसारिक मायामोह को तिलांजलि दे दी थी। मीरा की प्रेमभक्ति में नामस्मरणर रूपवर्णनए लीलागान और धाम विषयक आस्था विश्वास की रूप रेखाएँ विद्यमान हैं। इन सभी तत्वों के संयोजन से मीरा का भक्त रूप बना है। अपने आराध्य के भक्ति पदों में संयोग वियोग पक्ष के वर्णन के साथ साथ कल्पना तत्व और रहस्यवाद का समावेश भी किया है। निश्चय ही मीरा सच्ची तत्वज्ञानी थी जिसकी परिणति भक्ति में हो गई।*

मुख्य बिन्दु :– मीराबाई का जीवन परिचय , काव्य सौन्दर्य , प्रकृति चित्रण माधुर्य पद एवं भक्ति रस ।

मीराबाई का जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. में राजस्थान के मेड़ता जागीर का कुड़की नामक ग्राम में हुआ था। वे राठौर वंशी क्षत्रियों की मेड़तिया शाखा के प्रवर्तक राव दूदाजी के वंश में हुआ था। वे राव दूदा की पुत्री तथा रत्नसिंह की पुत्री थी। इनका विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुमार भोजराज के साथ हुआ था। मीरा को बाल्यकाल से ही भगवान श्री कृष्णा से प्रेम था, वे उन्हें ही अपना पति मानती थी। एक पद में उन्होंने कहा है–

मीरा को गिरधर मिलिया जी, पूरब जनम के भाग।

सुपणों में म्हारै परण गया जी, हो गया अचल सुहाग।।

मीरा का जीवन राणा भोजराज के साथ सुखपूर्वक बीत रहा था, कि अचानक भोजराज की मृत्यु हो गई और मीरा पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। पति की मृत्यु के बाद मीरा को संसार से वैराग्य हो गया और वे सांसारिक लज्जा को छोड़कर साधु–संतों के साथ सत्संग और हरि–कीर्तन करने लगी। मीरा के ससुराल वालों को यह बात अप्रिय लगती थी की राज परिवार के बहू साधु–संतो के बीच नाचे और गाये। इनके देवर ने इन्हें मारने के लिए विषधर काला नाग और विष का प्याला भेजा। कहते हैं कि मीरा के स्पर्श से काला नाग शालग्राम की सांवली सलोनी मूर्ति और विष का प्याला भगवान का चरणामृत बन गया। राणा के इन षड़यंत्रों से दुखी होकर मेरा तीर्थयात्रा के बहाने वृन्दावन चली गई और वहां से द्वारिका जाकर वहीं रहने लगी। कहते हैं कि सन् 1546 ई. में वे पद–गायन करते–करते द्वारिकाधीश के विग्रह में समाहित हो गयीं, केवल उनकी ओढ़नी ही प्राप्त हुई थी।

मीराबाई की प्रमुख रचनाएं

मीराबाई की प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित है–

(1) नरसी जी रो माहेरो

(2) राग गोविंद

(3) गीत गोविंद टीका (राग सूरठ से)

मीरा की सभी रचनाएं "मीरा पदावली" में संकलित है ।

मीराबाई की काव्य भाषा तथा शैली

मीराबाई के काव्य में ब्रज एवं राजस्थानी भाषा का मिश्रण मिलता है तथा मीराबाई गेय शैली का प्रयोग अपने काव्य में करती थी।

मीराबाई की काव्यगत विशेषताएं

संत काव्य के अन्य कवियों की भांति मीरा ने अपने पदों में भाव पर अधिक ध्यान दिया है। उन्हें व्यक्त करने के लिए जो सब अधिक उपयुक्त लगे उसका उन्होंने प्रयोग किया है

मीरा कृष्णा के प्रेम में दीवानी थी। कृष्णा उनके जीवन के केंद्रबिंदु हैं। उनका सारा काव्य कृष्णा से समृद्ध है। उनके मू काव्य में प्रायः कृष्णा के रूप सौंदर्य, उनके प्रति भक्ति तथा भावनात्मक संयोग–वियोग के चित्र दिखाई देते हैं। उनके काव्य का वर्ण्य विषय इस प्रकार है–

१.कृष्णा के रूप– सौंदर्य का वर्णन दृ मीरा ने अपनी कतिपय पदों में श्री कृष्णा के रूप सौंदर्य का अत्यंत हृदयस्पर्शी चित्र खींचा है। एक उदाहरण प्रस्तुत है–

'बस्यां म्हारो णेणण मां नंदलाल।

मोर मुकुट मकराकृत कुण्डलै अरुण तिलक सोहां भाल।

मोहन मूरत संवारां सूरत नैणा बण्या बिसाल।'

२.मीराबाई की भक्ति भावना

मीरा कृष्णा के भक्त हैं। उनकी भक्ति कांता भाव की है। वे गिरधार–नागर अपना स्वामी और अपने आपको उनकी दासी कहती हैं–

भज मन चरण कंवल अविनासी।

अरज करौं अबला कर जोरे श्याम तुम्हारी दासी।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटौ जम की फांसी।।

३.संयोग की भावानुभूति– मीरा कृष्णा के साथ भाव जगत में ऐक्य अनुभव करती है। उन्होंने अपने अनेक पदों में इसकी भावाभिव्यक्ति की है। उदाहरण के लिए

'मैं तो संवारे के रंग रांची।

साजिद सिंगार बांधि पग घुंघरू लोक लाज तजी नांची।।'

४.विरह–वर्णन दृ विरह–वेदना और पीड़ा की जितनी मार्मिक अभिव्यंजना मीरा के काव्य में हुई है, वैसे अत्यंत दुर्लभ है। उनके बिरह–वर्णन में तल्लीनता, तन्मयता तथा भावुकता है। अन्य कवियों का वर्णन जहां कल्पना–आधारित है, वही मेरा वर्णन व्यक्तिगत अनुभूति है। वे कहती हैं–

पान जयूं पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिण्ड रोग।

छाने लांघन मैं किया रे, राम मिलन के जोग ।

बाबल वैद बुलाइया रे, पकड़ दिखाई म्हारी बांह।

मूरख वैद मरम नहिं जानै, कसक कलेजे मांह।

जा वैदा घर आपने रे, म्हांरे नांव न लेय।

मैं तो दाघी विरह की रे, तू काहे कं औषध देर।।

५.भाषा : मेरा की भाषा कृत्रिमता से दूर ब्रज भाषा है जिसमें अनेक प्रांतों के शब्द प्राप्त होते हैं। इनकी भाषा पर मुख्य रूप से राजस्थानी और गुजराती का प्रभाव है। पूर्वी, पंजाबी और फारसी के भी सब यत्र तत्र मिलते हैं। इन्होंने अनेक प्रांतों का भ्रमण किया अतः पर्यटन शीलता का प्रभाव इनकी भाषा पर स्पष्ट दिखाई देता है। जिससे इनके पदों की भाषा में एकरूपता का अभाव है।

६.शैली : मीरा ने गीतात्मक शैली का अनुसरण करके पदों की रचना की है। उनके पदों में गेयता, संगीतात्माकता और अनुभूति की तीव्रता विद्यमान है। इनकी शैली को गीत काव्य की भावपूर्ण शैली कहा जा सकता है यह स्वयं ही इस शैली की जन्म दात्री तथा पोषिका हैं।

७.रस–योजना दृ मीराबाई के काव्य में प्रायः श्रृंगार रस की अभिव्यंजना हुई है। श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग तथा वियोग का अपने पदों में उन्होंने सुंदर निरूपण किया है। उनके भक्ति तथा विनय संबंधी पदों में शांत रस का प्रयोग है। पदों में मुख्य रूप से माधुर्य तथा प्रसाद गुण है।

८.अलंकार विधान दृ मीरा के काव्य का सृजन अलंकार निरूपण की दृष्टि से नहीं हुआ है तथापि इनके पदों में उपमा रूपक दृष्टांत आदि अलंकार स्वाभाविक रीति से आए हैं।

निष्कर्ष

मीरा के पद हिंदी साहित्य में अनूठे हैं। वे उनके हृदय की गहराई से निकले हैं, उनका दर्द उनके काव्य को अद्वितीय बनाता है। डॉ शिवकुमार शर्मा लिखते हैं–'मीरा का काव्य आंसुओं के जल से सिक्त, पल्लवित एवं पुष्पित प्रेमबेल के मनोहारिणी सुगंध से सुवासित है।'मीरा बाई हिन्दी साहित्य की भक्तिकालीन प्रथम कवयित्री कृष्णभक्ति शाखा की मधुरतम उपासक मीराबाई थी। उनका अन्तः बाह्य व्यक्तित्व भी पूर्णत एक जीवन्त काव्य था। उनके व्यक्तित्व को हम सुख दुःख से समन्वित सहजए गंभीर एवं शाश्वत अनुभूति भी कह सकते है। अपने प्रभु श्रीकृष्ण के अनन्य प्रेम के प्रति सर्वस्व समर्पित कर देने वाली और ईश्वर के प्रति दिव्य प्रेम की संदेशवाहक मीरा का जीवन अनेक उतार चढ़ावों से भरा रहा है। राजस्थान की रक्तरंजित धरती पर सभी विषमताओं से अकेली टक्कर लेने वाली मीरा ने अपने अखंड एवं अजेय व्यक्तित्व से निर्मित अपने प्रवाह में सदियों से सबको रस में सराबोर किया है।इस प्रकार मीरा की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक सर्वत्र दिखाई देती है। मीरा की रचना मूलतः भाव पक्ष पर आधारित हैं मीरा की भक्ति हृदय की हैए ज्ञान की नहीं। मीरा की भक्ति न किसी सम्प्रदाय से सम्बन्धित है और न ही किसी भी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक बंधनों को स्वीकार करती है। मीरा की भक्ति का एकमात्र लक्ष्य अपने साँवरिया की प्राप्ति था। ईश्वर का आंतरिक स्पर्श पाए बिना ऐसी अलौकिक रचना नहीं हो सकती।

संदर्भ सूची :–

1ण मीरा व्यक्तित्व और कृतित्व पृ०. 22
2ण वही पृ 26
3ण वही पृ 28
4ण मीरा का काव्य डॉ भगवानदास तिवारी पृ. 40.
5ण वही पृ० 41
6ण मीरा व्यक्तित्व और कृतित्व मीरा के प्रभु गिरधर गोपाल श्री देवेन्द्र सिंह शक्तावतः पृ० 135
7ण मीराबाई की पदावली पृ – 5
8ण वही पृ. 51.
9ण मीरा पदमालास डॉ आशुतोष गुप्तः पृ 64
10ण वही पद पृ० 49
11ण वही पृ. 50
12ण वैचारिकी त्रैमासिक मीरा क्रांतिधर्मी चेतना अक्तूबर दिसम्बर 20000 अंक 4ए पृ० 39–
13ण मीरा पदमाला सं० आशुतोष गुप्तः पद 10 पृ० 10